रॉबिन्स की दुर्लभता-संबंधी परिभाषा :-

प्रो० रॉबिन्स की परिभाषा हमें अर्थशास्त्र के संबंध में एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। उन्होंने अर्थशास्त्र की नवीन एवं वैज्ञानिक परिभाषा दी। उन्होंने अपनी पुस्तक An Essay on the Nature and significance science में बताया है कि आर्थिक जीवन में हम साधनों के अभाव

की समस्या में जूझते हैं, अतः मुख्य समस्या चयन की होती है। हमें आवश्यकता की तिव्रता के आधार पर उसका चुनाव करते हुए उसकी संतुष्टि करनी पड़ती है। इसी संदर्भ में उन्होंने अर्थशास्त्र को चयन का तर्कशास्त्र कहा है।

रॉबिन्स के अनुसार :-

"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यों तथा उनके सीमित एवं वैकल्पिक उपयोगवाले साधनों के परस्पर संबंधों के रूप में मानव - व्यवहार का अध्ययन करता है।"

रॉबिन्स ने यह स्पष्ट किया है कि अर्थशास्त्र सीमित साधनों द्वारा वैकल्पिक प्रयोगवाले साधनों के परस्पर सहारे चयन के आधार पर उद्देश्यों की प्राप्ति का अध्ययन करता है। इस तरह

रॉबिन्स की परिभाषा के मुख्य आधार :-

रॉबिन्स द्वारा दी गई परिभाषा के मुख्य चार आधार हैं :-

1. मानव की आवश्यकताएँ अपरिमित होती है।
2. आवश्यकताएँ समान महत्व की नहीं होती।
3. आवश्यकताओं की तुलना में साधन सीमित होते हैं।
4. साधनों का वैकल्पिक प्रयोग संभव होता है।

1. मानव की आवश्यकताएँ अनंत हैं। एक आवश्यकता की पूर्ति के बाद दूसरी आवश्यकता आ खड़ी हो जाती है। आवश्यकताएँ बार-बार आती रहती हैं। मनुष्य जीवन में आवश्यकताओं का क्रम लगातार जारी रहता है। समाज में निवास करनेवाले या एकांतवासी साधु - संत सबों के सामने यह क्रम चलता रहता है, भले ही उनकी आवश्यकताओं में थोड़ा अंतर हो।

2. सभी आवश्यकताएँ समान महत्व की नहीं होतीं। कुछ आवश्यकताएँ अपेक्षाकृत कम महत्व की। उदाहरण के लिए जाड़े में कंबल की आवश्यकता अधिक तीव्र होती है बनिस्बत पंखे के।

3. आवश्यकताओं की तुलना में उनकी पूर्ति के साधन सीमित हैं। साधनों की सीमितता या अभाव से अभिप्राय माँग की अपेक्षा

Oxford

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner